मैंने देखा, एक बूंद (CH-3) Detailed Summary || Class 12 Hindi अंतरा

पाठ का परिचय

इस कविता में अज्ञेय जी ने समुंद्र से अलग होती एक बूंद की व्याख्या की है अर्थात इस कविता में उन्होंने एक क्षण के महत्व को भी समझाया है

मैंने देखा

एक बूँद सहसा

उछली सागर के झाग से;

रंग गई क्षणभर

ढलते सूरज की आग से।

मुझ को दीख गया:

सूने विराट् के सम्मुख

हर आलोक-छुआ अपनापन

है उनन्मोचन

नश्वरता के दाग से!

- कवि कहते हैं कि मनुष्य अपने हर क्षण का अच्छे से प्रयोग करें तो वह एक दिन जरूर सफल हो जाएगा प्रत्येक मनुष्य को अपने हर पल की कीमत को समझना चाहिए
- एक बूंद का उदाहरण देते हुए कवि बताते हैं कि मनुष्य के जीवन का एक छोटा सा क्षण भी उसके संपूर्ण जीवन को बदल सकता है

- कवि कहते हैं कि बूंद का सागर से अलग होना इसका अर्थ है कि अब उसका अंत निश्चित है जब बूंद सागर से अलग हो जाती है तो वह खुद नष्ट हो जाती है परंतु सागर नष्ट नहीं है
- इसमें सागर की तुलना ब्रह्मा से की गई है
- कवि कहते हैं कि सागर से अगर कोई अलग होता है तो वह कुछ पल तो अपनी जिंदगी के खुशहाली से जिएगा परंतु एक ना एक दिन उसका अंत हो जाएगा क्योंकि वह सागर की तुलना ब्रह्मा से करते हैं और यदि ब्रह्मा से कोई अलग होगा तो उसका अंत होना निश्चित है

विशेष

- इस कविता में एक क्षण के महत्व को बताया गया है
- यह संगीतात्मक कविता है
- इस कविता में बूंद को मनुष्य का प्रतीक बताया गया है
- कवि की भाषा भावनात्मक है

https://www.evidyarthi.in/